

# जनजातीय समाज की मौखिक शिक्षा का रहा है अद्वितीय इतिहास : लता

बस्तर संभाग के 52 कॉलेजों के लिए शमक विवि का आयोजन

नवभारत रिपोर्टर। जगदलपुर।

जनजातीय समाज की सहभागिता का भाव और मौखिक शिक्षा का इतिहास अद्वितीय है। हमारी बाड़ी और खेतों में जड़ी-बूटी के रूप में औषधि की खान है। यह समाज स्वास्थ्य, शिक्षा, परंपरा के क्षेत्र में सशक्त है। जनजातीय समाज के पास हर प्रकार के ज्ञान का भंडार है। बस जो ज्ञान-परंपराएं परिस्थिति और काल के गर्त में चली गई है उसे उकेरकर सामने लाने की आवश्कता है। उक्त बातें शमक विवि में आयोजित कार्यशाला के दौरान बिविप्रा उपाध्यक्ष सुश्री लता उसेण्डी ने कहा।

कार्यक्रम में महापौर श्रीमती सफीरा साहू, कुलपति प्रो. मनोज कुमार श्रीवास्तव, बनवासी विकास समिति के श्री वैभव सुरंगे सहित अन्य उपस्थित थे।

जनजातीय समाज का गौरवशाली अतीत- ऐतिहासिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक योगदान' विशय पर आयोजित कार्यशाला में सुश्री उसेण्डी ने आगे कहा कि देश में जनजातीय वीर-वीरांगणों के बलिदान की कई भूमि है,

जनजातीय समाज के गौरवशाली अतीत विषय पर कार्यशाला आयोजित



## देश के निर्माण में अद्वितीय योगदान : कुलपति

स्वागत उद्घोषण में कुलपति प्रो. मनोज कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि अतीत से लेकर अब तक देश के निर्माण व विकास में जनजातीय समाज का योगदान अन्य समाज से तिल मात्र कम नहीं है। जनजातीय समाज का हर क्षेत्र में योगदान इतिहास में दर्ज है। वर्तमान केंद्र सरकार ने सम्पूर्ण जनजातीय समाज के उत्थान के लिए नौ पैरामीटर आइडेंटिफाइ कर काम शुरू किया है और 80 हजार करोड़ रुपये भी स्वीकृत की है। इससे देश के 63 हजार जनजातीय गांव लाभान्वित होंगे।

जिसे प्रणाम करने की इच्छा करता है। नई हम अपनी परंपराओं और ज्ञान को भुलाते पीढ़ी को इसकी जानकारी होनी चाहिए। जा रहे हैं। इस ज्ञान परंपरा को पुनर्जीवित इत्यादि समाज के पुरुखों से मिलना होगा।

संस्कृति को युवा पीढ़ी तक बढ़ाना होगा : कुलसचिव  
अपने आधार उद्घोषण में कुलसचिव अधिक कुमार बाजपेई ने कहा कि किसी समाज की संस्कृति नष्ट हो जाती है तो वह समाज भी मिट जाता है। हमें अपने गौरवमयी इतिहास और संस्कृति को युवा पीढ़ी के सहारे आगे तक पहुंचाना है। कार्यशाला के संयोजक डॉ. सजीवन कुमार ने कहा कि जनजातीय समाज के वीर-वीरांगनाएं प्रताङ्गित होकर भी देश के लिए सघर्ष करते रहे। हमें इन वीरों के इतिहास को शोध के सहारे लिखित रूप प्रस्तुत करने की जरूरत है।

कर भावी पीढ़ी तक ले जाने की जरूरत है। महापौर सफीरा साहू ने कहा कि जब आधुनिक शस्त्र नहीं थे, तब भी जनजातीय समाज अपने परंपरागत अस्त्रों से देश की आजादी के लिए लड़ा। हम फिर से उस इतिहास को जानने का प्रयास कर रहे हैं। इसे वर्तमान युवा पीढ़ी भी जाने और लोगों को बताए। कार्यशाला के प्रमुख वक्ता वैभव सुरंगे ने कहा कि जनजातीय समाज को समझने के लिए केवल विदेशी लेखकों को पढ़ने की आवश्यकता नहीं है। जनजातीय समाज के अतीत को जानने के लिए संथाल, मुरिया, मुंडा, गोंड व हल्ला इत्यादि समाज के पुरुखों से मिलना होगा।

# जनजातीय समाज का सहभागिता भाव, इतिहास अद्वितीय

समाज के गौरवशाली अतीत विषय पर विवि ने कार्यशाला की, बस्तर विकास प्राधिकरण की उपाध्यक्ष लता उर्सेंडी ने स्खे विचार

मास्टर न्यूज़ | जगदलपुर

जनजातीय समाज का सहभागिता भाव और मौखिक शिक्षा का इतिहास अद्वितीय है। हमारी बाड़ी और खेतों में जड़ी-बूटी के रूप में औषधि के खान हैं। वह समाज स्वास्थ्य, शिक्षा, परंपरा के क्षेत्र में सशक्त है। इनके पास ज्ञान का भंडार है। बस जो ज्ञान-परंपराएं परिस्थिति और काल के गर्त में चली गई हैं उसे सम्मने लाने की आवश्यकता है।

यह बातें सोमवार को बस्तर विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यशाला में बस्तर विकास प्राधिकरण की उपाध्यक्ष लता उर्सेंडी ने कही। देश में जनजातीय वीर-वीरांगनाओं के बलिदान की कई भूमि हैं जिन्हें प्रणाम करने की इच्छा होती है। हम परंपराओं और ज्ञान को भुलाते जा रहे हैं। कुलपति मनोज कुमार श्रीवास्तव ने कहा



कार्यक्रम में मौजूद लता उर्सेंडी और विश्वविद्यालय का स्टाफ।

कि अतीत से लेकर अब तक देश के निर्माण व विकास में जनजातीय समाज का योगदान अन्य समाज से तिल मात्र कम नहीं है। जनजातीय इतिहास में दर्ज है। केंद्र सरकार ने जनजातीय समाज के उत्थान के लिए नौ पैरामीटर आइडॉटेफ़र्झ कर काम शुरू किया है। इसमें धरती आबा जनजाति ग्राम उत्कर्ष

अभियान के तहत 80 हजार करोड़ रुपए खर्च होंगे। 63 हजार जनजातीय गांव लाभान्वित होंगे। महापौर सफाई साहू ने कहा कि जब आधुनिक शस्त्र नहीं थे तब भी जनजातीय समाज परंपरागत अस्त्रों से देश की आजादी के लिए लड़ा। हम फिर से उस इतिहास को जानने का प्रयास कर रहे हैं। वैभव सुरेंगे ने कहा कि

## कॉलेजों में होने वाले कार्यक्रम की रूपरेखा पर चर्चा

कार्यक्रम के तकनीकी सत्र को बनवासी कल्याण आश्रम के राजीव शर्मा, प्रकाश ठाकुर, यश जी, उमेश सिंह हरवंश जोशी ने संबोधित किया। इस दौरान 15 नवंबर तक विवि और कॉलेजों में होने वाले कार्यक्रम की रूपरेखा पर चर्चा की गई। कॉलेजों में जनजातीय वीर-वीरांगनाओं से लेकर प्रश्नोत्तरी, फोटो प्रदर्शनी, पैट्रिग, सांस्कृतिक कार्यक्रम जैसे विविध कार्यक्रम को करने जानकारी दी। इसमें बस्तर संघाग के 52 कॉलेजों से आए कार्यक्रम के संयोजकों और सह संयोजकों ने भाग लिया।

जनजातीय समाज को समझाने के लिए केवल विदेशी लेखकों को पढ़ने की आवश्यकता नहीं है। अतीत को जानने संथाल, मुरिया, मुंडा, गोड व हल्जा समाज के पुरुषों से मिलना होगा। अधिकारी कुमार बाजपेई ने कहा कि किसी समाज की संस्कृति नष्ट हो जाती है तो वह समाज भी मिट जाता है। डॉ. सजीवन कुमार ने कहा कि जनजातीय समाज के वीर-वीरांगनाएं प्रताङ्कित होकर भी देश के लिए संघर्ष करते रहे। हमें इन वीरों के इतिहास को शोध के सहारे लिखित रूप प्रस्तुत करने की जरूरत है। कार्यक्रम में पूर्व विधायक राजाराम तोड़म, दशरथ कश्यप, रामनाथ कश्यप, एस गव, गोपाल भारदाज, कमलेश, सत्यनारायण पुजारी, बालसायन नेताम, एसपी विसेन, डॉ. केपी सिंह, संजय जायसवाल, चेलाराम सिन्हा, गोपलनाथ, विमल पांडेय, शिवशंकर जी, रूपनाथ पांडेय, अमित कुमार इत्यादि उपस्थित थे।

# जनजातीय समाज की सहभागिता भाव और मौखिक शिक्षा का इतिहास अद्वितीय : लता

जगदलपुर, 7 अक्टूबर (देशबन्धु)

जनजातीय समाज का सहभागिता भाव और मौखिक शिक्षा का इतिहास अद्वितीय है। हमारी बाड़ी और खेतों में जड़ी-बूटी के रूप में औरांगी के खन हैं। यह समाज स्वास्थ्य, शिक्षा, परिवार के क्षेत्र में सक्षक है। जनजातीय समाज के पास हर प्रकार के जन का भवान है। वस जो जान-परंपराएं, परस्परिति और काल के गर्व में चली गई है उसे उकेरकर समान लाने की आवश्कता है। उक्त बत्ते सोमवार को शहीद महेंद्र क मा विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यशाला में बत्तीर मुख्य अंतिम बस्तर विकास प्राथिकरण को उपाध्यक्ष सुश्री लता उसेंदो ने व्यक्त किए। कार्यक्रम में महापीर भस्फोरा साहू, कूलपति प्री. मोनोज कुमार श्रीवास्तव, वाराणसी विकास समिति के वैभव सुरेण सहित अन्य उपस्थित थे।

जनजातीय समाज का गौरवशाली अंतीत-ऐतिहासिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक योगदान' विशय पर आयोजित कार्यशाला में सुश्री उसेंदो ने आगे कहा कि देश में जनजातीय लीर-बीरांगणाओं के बलिदान की कई भूमि हैं जिसे प्रणाम करने की इच्छा करती है। नई पीढ़ी को इसकी जानकारी होनी चाहिए। हम अपनी परंपराओं और जन को भलाते जा रहे हैं। इस जान परंपरा को पुनर्जीवित कर भावी पीढ़ी तक ले जाने की जरूरत है। अपने स्वागत उद्घाटन में



## जनजातीय समाज के गौरवशाली अंतीत विषय पर कार्यशाला आयोजित

कलपति प्री. मनोज कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि अंतीत से लेकर अब तक देश के निर्माण व विकास में जनजातीय समाज का योगदान अन्य समाज से तिल मात्र कम नहीं है। जनजातीय समाज का हर क्षेत्र में योगदान इतिहास में दर्ज है। प्री. श्रीवास्तव ने बताया कि बर्तमान की केंद्र सरकार ने समृद्ध जनजातीय समाज के उद्धार के लिए नी पैरामीटर आइडेंटिफाई कर काम शुरू किया है। इसमें धरती आवा जनजातीय ग्राम ढाकर्य अभियान के तहत 80 हजार करोड़ रुपये खर्च होंगे। इससे देश के 63 हजार जनजातीय गांव लाभान्वित होंगे। महापीर सफीरा साहू ने कहा कि जब आयुर्वित कर भावी पीढ़ी तक ले जाने की जरूरत है।

समाज अपने परंपरागत अस्त्रों से देश की आजादी के लिए लड़ा। हम फिर से उस इतिहास को जानने का प्रयास कर रहे हैं। इसे बर्तमान युवा पीढ़ी भी जाने और लोगों को बताए। कार्यशाला के प्रमुख वक्ता श्री वैभव सुरेण ने कहा कि जनजातीय समाज को समझने के लिए कवय विदेशी लेखकों को पढ़ने की आवश्यकता नहीं है। जनजातीय समाज के अंतीत को जानने के लिए संथाल, मुरिया, मुंडा, गोंड व हल्बा इत्यादि समाज के पूर्खज्ञों से मिलना होगा। श्री सुरेण ने कहा कि मुख्य समाज

का इस ओर कभी ध्यान ही नहीं दिया कि जनजातीय समाज का भी कोई आयातिक योगदान है और उनका कोई दर्शन है। जनजातीय समाज को सुनने से ज्यादा महसूस करके समझा जा सकता है। श्री सुरेण ने बताया कि भारतीय इतिहास जहां से शुरू हुआ है वहां से जनजातीय समाज का भी इतिहास प्रारंभ है। विना शबरी, कंवट प्रसंग के रामायण महाभारत भी अपूरा है। श्री सुरेण ने देश में आजादी में जनजातीय लीर-बीरांगणाओं का इतिहास बताते हुए कहा कि इस समाज का स्वतंत्र अंदोलन में बलिदान मंगल पांडे के बलिदान से भी पुराना है। वीर योद्धा तिलका मांडी ने 1780 में ही अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह

कर दिया था। यह संघर्ष क्रांति 1857 के स्वतंत्रता आंदोलन की प्रेरणा थी। अंग्रेजों के खिलाफ जनजातीय लीरों का विद्रोह संदर्भ चलता रहा। जो बत्ते संदियोग फहले चारवर्षीय ने कहा थी उसे भगवान विरास ने कहकर समाज को एकत्रित किया। भगवान विरास ने अपने छोटी भी आपु में युग्मों का काम किया। उक्तोंने समाज सुधार, न्याय, जान, क्रांति की नई सीख दी। श्री सुरेण ने अपने उद्घाटन में परलकोट विद्रोह, सिद्धो कामलों, भूमाकाल, पामगढ़ भौल क्रांति इत्यादि का जिक्र करते हुए कहा कि जनजातीय समाज को लेकर अंग्रेजों के कारण बनी खुराब छब्बि को बदलने का काम शिखत जगत के लोग ही कर सकते हैं। जनजातीय समाज की एक-एक परंपरा का द्वाक्षयमेंटन किए जाने का जरूरत है। उक्त इतिहास को लेकर नए सिरे से रिसर्च करना जरूरी है। अपने आधार उद्घाटन में कूलसचिव श्री अभिशेक कुमार बाजपेहड़े ने कहा कि किसी समाज को संस्कृत नश्त हो जाती है तो वह समाज भी मिट जाता है। हमें अपने गौरवमयी इतिहास और संस्कृति को युक्त पीढ़ी के सहाय रखना चाहिए।

अपने स्वागत उद्घोषण में कार्यशाला के संयोजक लांगूलीवन कुमार ने कहा कि जनजातीय समाज के लीर-बीरांगणाएं प्रताड़ित होकर भी देश के लिए संघर्ष करते रहें। हमें >> शेष पृष्ठ 9 पर >

**आयोजन :** जनजातीय समाज के गौरवशाली अतीत पर विश्वविद्यालय में कार्यशाला आयोजित, बविप्रा उपाध्यक्ष लता उसेंडी ने युवाओं से समाज को जानने का किया आद्वान

## जनजातीय समाज का देश के लिए योगदान अद्वितीय, युवा इसे जानें और पढ़ें

प्रिका न्यूज नेटवर्क  
प्रिका.प्रिका.com



### जनजातीय समाज को सुनने से ज्यादा महसूस करना जरूरी

कार्यशाला के मुख्य सभता देश सुरेणे ने कहा कि जनजातीय समाज को समाजने के लिए केवल विदेशी लोकों को पढ़ने की आवश्यकता नहीं है।

जनजातीय समाज के अतीत को जानने के लिए संशाल, मूरिया, मुड़ा, मोड़ व हल्का हुआवाही समाज के पुरुषों से मिलना होगा। भी सुरेणे ने कहा कि मूल्य समाज का इस ओर कभी घटान ही नहीं गया कि जनजातीय समाज आगे पारपान करने वाला वाहिनी अधिकार के तहत 80 हजार करोड़ करए खर्च करता हुआ कर कि इस समाज का सरकारता आदोलन में विलियन माल पाड़ के बिल्डर ही नहीं गया कि जनजातीय समाज का भी वाहिनी अधिकार वालों ने कहा कि किसी समाज की सुनने से जबका महसूस करके समझ आ सकत है। सुरेणे ने

बताया कि भारतीय इंडियन जगह से शुक्र हुआ है वहीं से जनजातीय समाज का भी इंडियन पारों है। किंतु शब्दी, कैटट प्रवाने के समाया

सरकारी को युवा पीढ़ी के साथरे आगे लक पहुंचाना है। कार्यशाला के शब्दोंमात्र ही, स्वीकृत कुमार ने कहा कि जनजातीय समाज के दौर प्रतापित होकर भी योग के लिए साथ दिये रहे। हमें हम सीरों के इतिहास के लाई के सहारे लिखिता रूप प्रस्तुत करने की जरूरत है। कार्यशाला के लकड़ी रह के समाजी कल्याण आश्रम के राजीव शर्मा, प्रकाश तुक्रे, यश जी, उमेश सिंह दत्तात्रेय जीरों ने संक्षिप्त किया। इस दौरान अगले 15 नवंबर तक योगदान अद्वितीय समाज की रूप रेखा पर चर्चा की जाए।

योगदान को विविध में कार्यशाला के शुभारम अवसर पर मीडिया अविद्या।

असीत ऐक्यानिक, यामाजिक एवं कुलस्ती प्रो. मनोज कुमार जीवासाब आपातान्त्रिक योगदान विषय पर यह ने कहा कि अतीत से सामाजिक अवसर कार्यशाला अविद्या की गई है। देश के नियमण व विकास में जनजातीय समाज वह योगदान अग्र लता उत्तरीयी ने कहा कि नई पीढ़ी को जनजातीय समाज का योगदान अग्र जनजातीय समाज के योग की समाज से विल मात्र कम नहीं है। प्रो. जनजातीय समाज के योग की समाज से विल मात्र कम नहीं है। प्रो. जनजातीय समाजी होनी चाहिए। जनजातीय विवादत्व ने बताया कि केंद्र सरकार के मध्यमी समीक्षा आमू ने कहा कि जब ने समूर्ख जनजातीय समाज के जनजातीय समाज के योगदान समूले देश में है।

छात्रों के अलावा जनजातीय समाज के लोग ह आन्य भी भोजुव रहे।

जनजातीय समाज के अतीत को जानने के लिए विविध तरह कर आपुनिक शब्द नहीं है वज भी काम शुरू किए हैं। इसमें पर्याती जनजातीय समाज आगे पारपान करने वाला वाहिनी अधिकार के तहत 80 हजार करोड़ करए खर्च करता हुआ कर कि इस समाज का सरकारता आदोलन में विलियन माल पाड़ के बिल्डर ही नहीं गया कि जनजातीय समाज का भी वाहिनी अधिकार वालों ने कहा कि किसी समाज की सुनने से जबका महसूस करके समझ आ सकत है। इसे चर्चान् युवा पीढ़ी भी जाने और लीगों को बाताएं।